International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-07-2026, Accepted: 28-08-2026, Published: 12-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 161-163

'झूठा–सच' में वर्णित सामाजिक चेतना (वैवाहिक जीवन की विसंगतियों के संदर्भ में)

डॉ. अनुपाल
सहायक प्रोफेसर, डीएवी महाविद्यालय, अबोहर, पंजाब, भारत

सारांश
'झूठा–सच' हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। इसे विभाजन की त्रासदी का वास्तविक दस्तावेज कहा जा सकता है। उससे संबंधित घटनाओं का व्यापक रूप में वर्णन हुआ है. पर साथ ही उपन्यास में वर्णित सामाजिक पक्ष भी उतना ही सबल है। उपन्यास विभाजन के कुछ वर्षों पहले तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष पश्चात् की घटनाओं पर आधारित है। साथ ही यशपाल ने समाज की ज्वलंत समस्याओं को भी उठाया है। सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत वैवाहिक जीवन की विसंगतियों, प्रेमविवाह, शिक्षा, नारी स्वातन्त्रय, साम्प्रदायिकता, प्रेम संबंध, बलात्कार, शरणार्थियों की समस्या, दूषित राजनैतिक वातावरण, पुरुषों की मानसिकता इत्यादि का अत्यन्त विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। परन्तु वैवाहिक जीवन की विसंगतियों को मुख्य रूप से सामने लाना प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य है। एक साहित्यकार के रूप में यशपाल की उड़ान भविष्य की ओर पूरी जागरूकता और निष्ठा के साथ है। झूठा सब में वर्णित वैवाहिक जीवन की विसंगतियाँ काल सापेक्ष है। उनका ज्वलंत रूप वर्तमान समाज में विद्यमान है। आज के समाज में कोई न कोई सूचना इससे संबंधित समाचार पत्रों, दूरदर्शन में मिल जाती है। दहेज के लिए प्रताड़ित स्त्रियों द्वारा आत्महत्या करना, अवैध संबंधों के कारण पति–पत्नी में मनमुटाव, हत्याएँ आदि सूचनाओं से समाचार पत्र पटे रहते हैं। यह यशपाल के अनुभव और दूरदृष्टि का ही परिणाम है, जो उन्होंने आने वाले रूप की ज्वलंत समस्याओं को इतने वर्ष पहले विस्तृत रूप से वर्णित किया और भविष्य दृष्टा की तरह उनका समाधान करने का प्रयत्न भी किया।

मूल शब्दः झूठा–सच, नारी शिक्षा, स्वातंत्र्य, वैवाहिक जीवन, समाज, सामाजिक, संवेदना, विभाजन, समस्याएं, समानता

किसी भी कृति के सृजन में रचनाकार की संवेदनशील दृष्टि रहती है। सामाजिक परिवेश, वातावरण, मान्यताएँ, विश्वास और संवेदनाएँ उसे प्रभावित एवं आलोड़ित करती हैं। अपने विचारों के प्रकटीकरण हेतु साहित्यकार एक कुशल शिल्पी की भांति ,पात्रों एवं स्थितियों का चयन ऐसे करता है कि रचना सामाजिक परिदृश्य पर खरी उतर सके। 'झूठा–सच' हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है। इसे विभाजन की त्रासदी का वास्तविक दस्तावेज कहा जा सकता है। उससे संबंधित घटनाओं का व्यापक रूप में वर्णन हुआ है. पर साथ ही उपन्यास में वर्णित सामाजिक पक्ष भी उतना ही सबल है। झूठा–सच में विभाजन के कुछ वर्षों पहले तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के कुछ वर्ष पश्चात् की घटनाओं पर आधारित है। साथ ही यशपाल ने समाज की ज्वलंत समस्याओं को भी उठाया है। सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत वैवाहिक जीवन की विसंगतियों, प्रेमविवाह, शिक्षा, नारी स्वातन्त्रय, साम्प्रदायिकता, प्रेम संबंध, बलात्कार, शरणार्थियों की समस्या, दूषित राजनैतिक वातावरण, पुरुषों की मानसिकता इत्यादि का अत्यन्त विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। परन्तु वैवाहिक जीवन की विसंगतियों को मुख्य रूप से सामने लाना प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य है। यशपाल ने प्रयत्न किया है कि जो परंपराएँ समाज के विकास, मनुष्य की उन्नति के पथ में बाधा बनती है. उन्हें त्यागना ही श्रेयस्कर है।

वैवाहिक जीवन की विसंगतियां

यशपाल ने इस उपन्यास में विवाह और वैवाहिक जीवन की विसंगतियों के माध्यम से नारी की कथा को प्रधानता दी है. पुरुष की अपेक्षा नारी का वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण अवस्था में बीतता है। विवाह के जिन पहलुओं पर यशपाल ने प्रकाश डाला है, वे इस प्रकार है–

अनमेल विवाह

सीलम बैंकटेश्वर राय के शब्दों में –'झूठा सच में अनमेल विवाह समस्या पर यथार्थवादी दृष्टि से विचार किया है। यद्यपि विवाह संस्था पर आस्था व्यक्त की गई है तथापि प्राचीन मूल्यों को नकारा और आधुनिक मूल्यों को स्वीकारा गया है। वर वधू चयन में स्वतन्त्रता, दाम्पत्य जीवन में समानता और अनमेल विवाह यौवनावस्था में तलाक की व्यवस्था की वकालत की गई है।' [1]

इस उपन्यास में तारा–सोमराज, शीलो मोहनलाल, मिस्टर एवं मिसेज अगरवाला आदि के माध्यम से बेमेल विवाह के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। तारा का विवाह दुहाजू सोमराज से हो जाता है. जबकि वह असद को पसन्द करती है। तारा के माँ–बाप गरीब है। पुरी भी इस विवाह का विरोध नहीं करता, उसके विचार स्वयं तक ही सीमित है। सोमराज तारा के समक्ष कहीं भी नहीं ठहरता। तारा स्नातक है, जबकि सोमराज नकल करते पकड़ा गया था, परन्तु माता पिता की गरीबी के कारण उसे विवाह करना पड़ता है। सोमराज विवाह की प्रथम रात्रि ही उससे अमानुषिक व्यवहार करता है। उसका स्वागत मार–पीट और गालियों से करता है। ऐसी दशा में वह पति की अमानुषिकता से मुक्ति पाने के लिए घर छोड़ देती है।

शीलो का जीवन भी बेमेल विवाह से त्रस्त है। उसका मोहनलाल से विवाह कर दिया जाता है। साम्प्रदायिक दंगों में वह ससुराल से बिछुड़ जाती है। पुनः उनके साथ भेंट हो जाने पर भी उसका पति उसे स्वीकार करने में हिचक दिखाता है, क्योंकि वह शीलो की संतान को अपनी नहीं मानता, बल्कि रन्त की स्वीकार करता है। इसी कारण शीलो को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

मिस्टर अगरवाला भी ऐसी अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहे है। उनकी पत्नी उन पर विश्वास नहीं करती। दूसरी स्त्रियों से बात कर लेने पर बखेड़ा खड़ा कर देती है। श्यामा के साथ उनका बोलना अच्छा नहीं लगता। श्यामा तारा से कहती है–'उनका क्या बिगड़ रहा है? वहीं चुड़ैल बवंडर खड़ा किए रहती है, उसे यही जलन है कि उसका पति जरा खुश क्यों हो जाता है। सबके सामने उस गरीब की बदनामी करती फिरती है। एक दिन तो इतना परेशान हो गया कि सोचने लगा रात को बंगले के सब दरवाजे बन्द करके आग लगा दे कोई भी न बचे।' [2]

लेखक ने जीवन की अधिकांश परिस्थितियों का मूल बेमेल विवाह को माना है। तारा कल्पना में डूब गयी–दुखी व्यवथाओं का अंत

नहीं है। कहीं शारीरिक, कहीं मानसिक मेरे दुःख, बंती के दुख अगरवाला तथा डे का दुःख ,शीलो और श्यामा के दुःख जब और कोई दुख नहीं तो अतृप्त प्यार का दुःख। संसार की सब भूलों से बड़ी बेमेल ब्याह की भूल...।' [3]

इस प्रकार बेमेल विवाह का दुष्परिणाम बताते हुए इसका सभाधान भी प्रस्तुत किया है, तारा अंत में डॉ. नाथ के साथ स्नेह बंधन में बंध जाती है। तारा और सोमराज के संबंध पति–पत्नी जैसे अवश्य हैं, परन्तु उसे जीवन में वह सुख नहीं मिला, जो पत्नी के रूप में उसे मिलना चाहिए था। दूसरे के व्यक्तित्वों की निकटता भी उतनी ही आवश्यक है। नारी को पूरा अधिकार है कि यह जड़ हो गए वैवाहिक संबंधों को त्याग दे। झूठा सच में तारा, कनक विषम परिस्थितियों में अपना मार्ग ढूंढती है। सरोज बजाज के शब्दों में – 'हमारे समाज में जन्म–मरण शादी के ऐसे नियम बन गए है, जिनको पूरा करना व्यक्ति का कर्तव्य माना जाता है। वैसे देखा जाए तो मनुष्य ने ही नियम बनाए है, तो फिर मनुष्य उसे तोड़ भी सकता है, परन्तु साधारण मनुष्य ऐसा करने का साहत नहीं जुटा पाता।' [4]

विवाह के संबंध में झूठा–सच के पात्र पर्याप्त प्रगतिशील हैं। वे नियमों को तोड़ने का साहस दिखाते हैं। पुरुष पात्रों में डॉ. नाथ गिल, असद, रतन, मोंगिया आदि ऐसे ही पात्र हैं. जो अपनी सामाजिक चेतना में परिवर्तन कर नारी को विकट परिस्थितियों में संभालते हैं तथा अनमेल विवाह के बंधन से मुक्त होने में सहायता करते हैं।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से नारी और पुरुष के संबंध में क्या झूठ है और क्या सच इसे तारा सोमराज के संबंधों द्वारा आसानी से समझा जा सकता है। विवाह में शारीरिक संबंध का होना ही पर्याप्त नहीं वरन् एक दूसरे को जानना और एक दूसरे के व्यक्तित्वों की निकटता भी उतनी ही आवश्यक है। नारी को पूरा अधिकार है कि यह जड़ हो गए वैवाहिक संबंधों को त्याग दे। झूठा सच में तारा, कनक विषम परिस्थितियों में अपना मार्ग ढूंढती है। सरोज बजाज के शब्दों में 'हमारे समाज में जन्म–मरण शादी के ऐसे नियम बन गए है, जिनको पूरा करना व्यक्ति का कर्त्तव्य माना जाता है। वैसे देखा जाए तो मनुष्य ने ही नियम बनाए है, तो फिर मनुष्य उसे तोड़ भी सकता है, परन्तु साधारण मनुष्य ऐसा करने का साहत नहीं जुटा पाता।' [4]

विवाह के संबंध में झूठा–सच के पात्र पर्याप्त प्रगतिशील हैं। वे नियमों को तोड़ने का साहस दिखाते हैं। पुरुष पात्रों में डॉ. नाथ, गिल, असद, रतन, मोंगिया आदि ऐसे ही पात्र हैं. जो अपनी सामाजिक चेतना में परिवर्तन कर नारी को विकट परिस्थितियों में संभालते हैं तथा अनमेल विवाह के बंधन से मुक्त होने में सहायता करते हैं।

सम्बन्ध विच्छेद: पति–पत्नी का आपसी मतभेद, संदेहात्मक वृत्ति, अविश्वास की भावना, अहंभाव, दो समतुल्य व्यक्तियों की टकराहट आदि ऐसे कारण हैं. जो सुखी दाम्पत्य के आड़े आते हैं और पति पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद तक की नौबत आ जाती है।

झूठा–सच: की कनक आधुनिक विचारों वाली लड़की है। यह पुरी को ह्रदय से प्रेम करती है। पुरी को उर्मिला के साथ एक ही कमरे में पाकर भी उसके साथ विवाह कर लेती है। विवाहोपरांत उसे मालूम पड़ता है कि दोनों के विचारों में जमीन आसमान का अंतर है। घर में सास भी बहू के प्रति विरक्त है। कनक का गृहस्थ जीवन असफल सिद्ध होता है। वह इस बात के लिए पश्चाताप करती है। पुरी के साथ उसका किसी न किसी बात पर झगड़ा रहता है। परिणामस्वरूप वह पुरी से संबंध विच्छेद की बात सोचती है। वह गिल के विचारों से प्रभावित होकर पुरी से संबंध विच्छेद करके उससे नाता जोड़ लेती है।

यशपाल प्रथम दर्शन में ही प्रेम विवाह को भी असफल दाम्पत्य जीवन का कारण मानते हैं। कनक के तलाक लेने के संदर्भ में उद्घाटित करने के विषय में स्वयं लेखक का कहना है–' मैंने पहले कनक को निर्भय चित्रित किया है और उसी पृष्ठभूमि में यह दिखाया है कि गृहस्थी की वर्तमान परिस्थितियों में पति के चुनने में भूल होने पर नारी के सम्मुख कैसी समस्या आ सकती है और उस परिस्थिति में समेत आत्मसम्मान युक्त नारी की भावना क्या होगी? [5]

झूठा सच के पात्रों में सम्बन्ध विच्छेद के संदर्भ में इन्द्रनाथ मदान का कथन है –' यशपाल विवाह को एक सामाजिक बंधन के रूप में स्वीकार नहीं करते, वे उसे एक वैयक्तिक संबंध के रूप में मान्यता देते हैं। यदि कनक तथा पुरी के विवाहित जीवन में सार नहीं रहा, तारा–सोमराज के विवाह का आधार नहीं रहा, शीलो तथा मोहनलाल का गठबंधन शिथिल पड़ चुका है. तो नारी को पूरा अधिकार है कि वह नया संबंध स्थापित कर राके इसमें भी सामाजिक न्याय है और यह सच है। यशपाल की दृष्टि में शेष झूठ है।' [6] यशपाल की सामाजिक चेतना असफल दाम्पत्य की सलीब ढोने की अपेक्षा विवाह–विच्छेद का समर्थन करती है।

समाज में विवाह जैसे पवित्र बंधन, जिसमें दो आत्माओं का मिलन होता है. को भी क्रय–विक्रय का साधन बना लिया गया है। हमारे समाज में लड़की पैदा होने पर अधिकांशतः शोक मनाया जाता है। उसके जन्म से ही दहेज की चिंता शुरू हो जाती है। बिना दहेज के योग्य वर मिलना बहुत कठिन है। दहेज प्रमुख है, लड़की की सुन्दरता या योग्यता गौण। झूठा सच में यशपाल ने दहेज की समस्या को सामने रखा है। तारा की माँ की मास्टर जी की अव्यवहारिक बुद्धि पर भी खेद होता था। लड़की को यूं ही जल्दी–जल्दी इतनी पढ़ा देने की जरूरत ही क्या थी ? गरीब की लड़की के दहेज का प्रलोभन किरो था? मास्टर जी की आशा कि लड़की की बुद्धि और शिक्षा उसके लिए स्वयं ही वर आकर्षित कर लेगी, मिथ्या प्रमाणित हो रही थी।' [7]

दहेज न दे पाने के कारण मास्टर जी को अपनी सुन्दर, सुशिक्षित योग्य लड़की तारा को दुहाजू और कुपात्र सोमराज साहनी के साथ ब्याह देना पड़ता है, जिससे तारा का पूरा जीवन नष्ट हो जाता है। मनुष्य दहेज जुटाने के लिए संपत्ति, मकान बेचता है, कर्ज लेता है, हर संभव प्रयास करता है। पूरणदेई अपनी लड़की सीता के लिए दहेज जमा करने में कड़ा परिश्रम करती है। पूरणदेई विधवा है। उसका पति 25 साल पहले मर चुका है और उसने अपनी लड़की की स्कूल में चपरासिन की नौकरी करके पढ़ाया–लिखाया और पाला–पोसा। उसके जेठ ने धोखे से सारी सम्पत्ति अपने नाम करवा ली थी। इसलिए उनका दारिद्रय और बढ़ गया था। उपन्यासकार के शब्दों में 'बेटी का विवाह था। पच्चीस वर्षों से कलाइयों पर दो सोने की चूड़ियों पहने थी। चूडियां घिसकर तार की तरह पतली ही गई थी। पूरणदेई ने यह भी बेच दी थी कि फिर भी पूरा नहीं पड़ रहा था। आँसू आ–आ जाते थे। तारा के सामने हाथ जोड़कर बोली, बेटी कफन के लिए भी नहीं रखा, अब बहन का कारज निबाह देना तेरे हाथों में है।' [8]

तारा इस विवाह पर खर्च करती है, परन्तु अपना कर्तव्य समझकर। समाज के अधिकांशतः माँ–बाप की यही वेदना और व्यथा है। यशपाल ने नारी को वर के चयन की स्वतन्त्रता का समर्थन किया है, जहाँ विद्या ही लड़की का धन हो। यशपाल की सामाजिक चेतना दहेज का विरोध करती है। तारा और डॉ. प्राणनाथ, शीलो और रतन के सुखी दाम्पत्य के लिए दहेज की कमी अनुभव नहीं हुई।

दाम्पत्य में यौन शुचिता की अवधारणा

भारतीय नारी के लिए सबसे बड़ा नैतिक बंधन है– यौन पवित्रता। पुरुष चाहे कितनी भी स्त्रियों के साथ रहे. परन्तु स्त्री

से अपेक्षा की जाती है कि उसका किसी प्रकार का संबंध विवाह से पहले न हो। यशपाल ने नैतिकता की इस रूढ़ मान्यता को अस्वीकार किया है। ऐसा भी नहीं है कि उन्होंने विवाह पूर्व यौन–संबंधों का खुल कर समर्थन किया है। झूठा सच में उन्होंने प्रसंगानुकूल अपने मत की पुष्टि भी की है। उनके अनुसार– 'पूर्ण स्वतन्त्रता तो उचित है. लेकिन उसके लिए भी सीमित दायरा, जिसमें विकृतियां न आएँ, होना चाहिए। वे जहाँ प्रेम और आकर्षण को सहन और स्वाभाविक मानते है, वहीं वे नियन्त्रण और संयम भी चाहते हैं। नैयर के माध्यम से अपने विचार प्रकट करते–'संयम ही संस्कृति है, व्यवहार रूढ़ि बनकर संस्कृति कहलाता है। मोटर की तेज चाल उसका गुण है. परन्तु जिस मोटर में ब्रेक न हो, वह प्राणों का संकट जरूर बनेगी।' [9]

किन्तु संयम का यह बन्धन केवल नारी के लिए ही है। भारत–पाक विभाजन के समय न जाने कितनी लड़कि स्त्रियों बलात्कार की शिकार हुई। किस्मत की नारी ऐसी स्त्रियों समाज पर केवल बोझ ही समझी गई, बंती का पति कहता है –'कैसे रखलें ? दो महीने मुसलमानों के घर रहकर आयी है... दूर रह. तुझसे कह दिया तू अरहर लोगों के किस काम की ? 'सास ने बंती का सिर पॉव से ढकेल दिया।' [10]

किन्तु भारतीय नारी का प्रतीक बंती वहीं दहलीज पर सिर पटक–पटक कर अपनी जान दे देती है। ऐसी घटनाएँ पुरूष–प्रधान समाज की निर्ममता को उजागर करती है। बलात्कार की शिकार होकर तारा अपने धैर्य एवं संयम के साथ समाज में अपना स्थान बनाती है। यशपाल ने डॉ. प्राणनाथ के माध्यम से पुरुषों की बदलती मनः स्थिति का परिचय भी दिया है, जो तारा को गुप्त रोगी होते हुए भी अपना लेता है।

यशपाल नारी कल्याण के प्रबल समर्थक रहे हैं। पुरुष को विवाह पूर्व संबंधों से कोई दुश्चरित्र नहीं समझा जाता जबकि ऐसी स्त्रियों के लिए समाज में कोई स्थान नहीं है। मानव के रूप में उनसे भूल हुई तो क्या वह जीने की अधिकारी नहीं। पुरुष पात्रों के माध्यम से यशपाल ने यह कहने का प्रयास किया कि यदि पुरुष स्त्री के शरीर की अपेक्षा मन को समझे तो स्त्री पुरुष दोनों का ही कल्याण है। कनक पुरी से विवाह करती है। एक बच्चे की माँ बनती है. परन्तु उससे तलाक लेने के पश्चात् गिल से विवाह कर लेती है। विधवा उर्मिला भी सर्वप्रथम पुरी के प्रति आकर्षित होती है। उसको उससे गर्भ भी रह जाता है। सूद जी के कहने पर पुरी उसे घर से निकाल देता है। तब वह फूट–फूट कर रोती है। उसकी दीनता इन शब्दों में प्रकट होती है– 'मुझे गली बाजार में धक्का मत दो, जैसे कहोगे पड़ी रहूंगी एक तरफ, निकालो मत, बेशक ज़हर देकर मार डालो।' [11] परन्तु नर्सिंग ट्रेनिंग लेकर वह पूरी तरह आत्मनिर्भर ही नहीं बनती, अपितु डॉक्टर मोंगिया से शादी कर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व भी बनाती है। शीलो को भी पति मोहन की तरफ से उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। वह उसकी संतान को अपनी नहीं मानता। उसके भी शादी से पूर्व रतन से संबंध थे। इसी कारण उसका पति उसे त्याग देता है. तारा शीलो–रत्तन का मिलन करवा देती है। इस प्रकार यशपाल ने नारी और पुरुष की शुचिता संबंधी मान्यताओं के पुनर्विचार पर बल दिया है।

सुखद दाम्पत्य में जाति–पाति के बंधन, जाति प्रथा को समाप्त करने एवं अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देने में यशपाल समय के साथ हैं। अन्तर्जातीय विवाह पद्धति अभी अपने शैशव काल में है और परीक्षणात्मक स्थिति से गुजर रही है। समाज का एक वर्ग अभी तक इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं है और यही कारण है कि अन्तर्जातीय विवाहों की सफलता की कोई गारण्टी नहीं है। यशपाल ने सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए झूठा सच में अन्तर्जातीय अंतर्धर्मीय विवाह का समर्थन किया है। कनक और पुरी का विवाह इस बात का उदाहरण है। यह विवाह कितना सफल हुआ, यह एक अलग बात है। इसी प्रकार कम्युनिस्ट नेता चड्ढा और नर्स मर्सी का विवाह भी इसी उपन्यास में हुआ। तारा की सहेली जुबेदा भी एक हिन्दू लड़के प्रद्युम्न से शादी करती है। यह इस बात का संकेत है कि विवाह को इस उपन्यास में वैयक्तिक स्वतन्त्रता के रूप में मान्यता दी गई है। विवाह एक धार्मिक संस्कार न हो कर, जीवन की व्यवहारिकता है। इसी के साथ वर–वधू के चयन की स्वतन्त्रता के पक्ष में बात रखी गई है। सीलम वैंकटेश्वरराव के शब्दों में 'वैवाहिक समस्या के बीज पहले भाग में बोये गये और दूसरे भाग में इनका पल्लवन, विकास और अंत में निदान निर्देशित किया गया। प्रेम और विवाह समस्या पर व्यापक परिप्रेक्ष्य में विचार किया गया है। यह एक ऐसी उलझी हुई गुत्थी है, जिससे अनेक उलझनें जुड़ी हुई है। हर उलझन को सुलझाने के लिए एक–एक युगल की सृष्टि हुई है। हर कोण में विसंगतियों, विडम्बनाओं और विद्रूपों को उछाला गया है और नये मूल्यों की स्थापना की गई है।' [12]

झूठा–सच के दोनों भागों में जिन युवक–युवतियों के प्रेम–विवाहों का उल्लेख हुआ है, उन पर विहंगम दृष्टि डालने से विदित होता है कि वैवाहिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं एवं रुढ़िगत बाधाओं से विमुक्त कर यशपाल नये आधुनिक मानदंडों के आधार पर एक स्वस्थ दाम्पत्य जीवन की स्थापना करते हैं। झूठा–सच में वर्णित सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत वैवाहिक जीवन की समस्याओं पर विचारोपरान्त कहा जा सकता है कि एक साहित्यकार के रूप में यशपाल की उड़ान भविष्य की ओर पूरी जागरूकता और निष्ठा के साथ है। झूठा सब में वर्णित वैवाहिक जीवन की विसंगतियाँ काल सापेक्ष है। उनका ज्वलंत रूप वर्तमान समाज में विद्यमान है। आज के समाज में कोई न कोई सूचना इससे संबंधित समाचार पत्रों, दूरदर्शन में मिल जाती है। दहेज के लिए प्रताड़ित स्त्रियों द्वारा आत्महत्या करना, अवैध संबंधों के कारण पति–पत्नी में मनमुटाव, हत्याएँ आदि सूचनाओं से समाचार पत्र पटे रहते हैं। यह यशपाल के अनुभव और दूरदृष्टि का ही परिणाम है, जो उन्होंने आने वाले रूप की ज्वलंत समस्याओं को इतने वर्ष पहले विस्तृत रूप से वर्णित किया और भविष्य दृष्टा की तरह उनका समाधान करने का प्रयत्न भी किया।

संदर्भ–ग्रंथः

1. सीलम वेंकटेश्वरराव, यशपाल के उपन्यासः समस्या मूलक अध्ययन (हैदराबाद सीलम् प्रकाशन, 1993), पृष्ठ 159
2. यशपाल, झूठा सच (भाग 1, 2) इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, 1973, पृष्ठ 348.
3. वही, पृष्ठ 348.
4. सरोज बजाज, यशपाल का उपन्यास साहित्य (नई दिल्ली ऋषभचरण जैन, 1979), पृष्ठ 152.
5. प्रकाश चंद्र मिश्र, यशपाल का कथा साहित्य (दिल्ली मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड, 1978). पृष्ठ 166.
6. इंद्रनाथ मदान, आज का हिन्दी उपन्यास 'गोदान से व दिन' तक (दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 1966). पृष्ठ 83.
7. यशपाल, झूठा सच (भाग 1, 2). (इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन, 1973), पृष्ठ 14.
8. वहीं, पृष्ठ 470.
9. वहीं, पृष्ठ 376.
10. वही, पृष्ठ 255.
11. वही, पृष्ठ 209.
12. सीलम वेंकटेश्वरराव, यशपाल के उपन्यास रू समस्या मूलक अध्ययन (हैदराबाद सीलम् प्रकाशन, 1983), पृष्ठ 160.